हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' की काव्य दृष्टि : एक अध्ययन।

रॉंची विश्वविद्यालय रॉंची पीएच.डी.
हिन्दी उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध

मानविकी संकाय

वर्ष : 2024

शोध निर्देशक

डॉ जितेन्द्र कुमार सिंह
(सहायक प्राध्यापक)
विश्वविद्यालय हिन्दी
विभाग रॉंची विश्वविद्यालय,
रॉंची(झारखण्ड)

शोधार्थी

रोहित केरकेट्टा
यू.जी.सी.नेट उत्तीर्ण
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
रॉंची विश्वविद्यालय, रॉंची(झारखण्ड)

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग

रॉंची विश्वविद्यालय, रॉंची (झारखण्ड)

हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' की काव्य दृष्टि : एक अध्ययन

- प्रस्तावना।
- शोध की परिकल्पना।
- अनुसंधान की प्रविधि।
- शोध का उद्देश्य
- शोध विषय का चयन।
- शोध अध्ययन का क्षेत्र।
- प्रस्तावित शोधकार्य का प्रारूप
- उपसंहार
- परिशिष्ट

प्रस्तावना :—

प्रस्तावित शोध शीर्षक का विषय विस्तृत एवं व्यापक है, जिसमें सन् सत्तर के दशक के बाद वर्तमान दशक तक की हिंदी साहित्य में परिवर्तित सांहित्यिक मनोवृत्तियों और अनेक धाराओं बँटी—बही काव्य जनित बयार भारतीय के समाज के पीड़ित और पीड़क दोनों समूहों को आँख दिखाती हुई सचेत करती रही है और अनेक वादों के रूप में काव्य के उद्यान में नागफनी संज्ञाओं के स्वत्व की रेखाओं को मिटाती रही है। विवेच्य शोध—विषय हरेराम त्रिपाठी की काव्य दृष्टि : एक अध्ययन में सत्तरवें दशक के बाद के समय समाज के चित्र कई कई रंग और रूपों में उकेरे गये हैं। सिसकती स्वाधीन सर्जना किस प्रकार आतंक के दुखद जंगल में और चाटुकारिता के दलदल में फँसकर कराह रही है इसकी जीवंत आकृतियों को मुखर स्वर प्राप्त हुआ है चेतन की काव्य कृतियों में। आलोच्य शोध—विषय में टूटती बिखरती मनुष्यता, रंग बदलती सत्ता, आठ—आठ आँसू बहता समय और फाँसी पर चढ़ी संस्कृति तथा देशभक्ति की चेतन को हौसला देते हुए समय का मानचित्र बनाते हुए कवि—दृष्टि इतिहासकार के रूप में उपस्थित हुआ है। इस शोध विषय में देश और समाज की बिमारियों, बौद्धिकों तथा रचनाकारो के स्वप्नों का अर्थ प्रदान किया गया है। साथ ही समकालीनता में अतीत के चुम्बकीय कणों की प्रतिष्ठा की गई है। इसको स्पष्ट करने के लिए विश्लेष्य शोध—विषय को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। वैसे महादेवी वर्मा की अवधारणा में काव्य—दृष्टि समय की खण्डशः स्थिति को अपनी सीमा नहीं मानती। वह एक संवेदन से चलकर संवेदन—संसृति के चरम बिंदु तक पहुँच जाती है। ऐसी काव्य—दृष्टि हम हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' के काव्य में पाते हैं जिसकी पड़ताल विस्तार से प्रस्तुत शोध विषय के माध्यम से पांच अध्यायों में किया गया है।

प्रथम अध्याय

प्रथम अध्याय में हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' के जीवन वृत्त और उनका सृजन लोक पर विचार किया गया है। जिसमें प्रारंभिक जीवन, संस्कार, अध्ययन तथा अध्यापन पर प्रकाश डालते हुए पारिवारिक परिवेश, कलात्मक अभिरुचियों, काव्यगत संस्कार और प्रेरणा के स्रोत पर विस्तार से विचार किया गया है।

द्वितीय अध्याय

हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' का रचना पर एक व्यापक विश्लेषणात्मक दृष्टि डालते हुए उनकी प्रकाशित कृतियों की अन्तवस्तुओं की वैज्ञानिक छानबीन और विवेचन करते हुए उनमें उपस्थापित विविध आयामों की पड़ताल की गई है।

तृतीय अध्याय

तीन इसमें हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' की समकालीन काव्य दृष्टि की सामाजिक सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना के उभरते विलुप्त होते तत्वों अत्यंत विस्तार और सूक्ष्मता से विवेचन किया गया है। इस परिधि में लोक दृष्टि की काव्य में अपरिहार्यता को व्याख्यामित करते हुए नारी अस्मिता की ज्वलंतता पर गहराई से प्रकाश डाला गया है, साथ ही मानव–जीवन में प्रेम की व्यापकता और सामासिक समरस जीवन में उसके महत्व का प्रतिपादन किया गया है। इस अध्याय में सामाजिक दृष्टि और उसके अनुरूप यथार्थ मानवीय चेतना के महनीय महत्ता पर भी बहुआयामों विवेचन प्रस्तुत की गई है। इस अध्याय का केंद्रीय विषय के रूप में विकासशील एवं सार्वभौम काव्य–दृष्टि अनिवार्यता का प्रतिपादन विस्तार से किया गया है।

चतुर्थ अध्याय

इस अध्याय में हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' की कृतियों में निदर्शित प्रेम–संबंधित अवधारणा मानव की अंत चेतना एवं बहिर्चेतना की पृष्ठभूमि पर करते हुए नारी की गरिमा तथा अस्मिता के संदर्भ में इसके स्वत्व को शाश्वत मानते हुए किया गया है। प्रेम के विभिन्न आयामों जैसे वैयक्तिक प्रेम सामाजिक एवं वैश्विक प्रेम, जीव–मात्र के प्रति प्रेम, जातीय प्रेम, प्रकृति प्रेम, आत्मिक प्रेम, कला एवं साहित्य–संगीत प्रेम, नारी–पुरुष प्रेम इत्यादि मानव–अस्तित्व को प्रभावित करने वाले तथा अर्थपूर्ण बनाने वाले प्रेम–रूपों की वर्णन इसमें डूब कर प्रस्तुत की गई है।

पंचम अध्याय

इस पाँचवें और अन्तिम अध्याय में प्रकृति, उसके स्वरूप, प्रकृति के अवदान एवं प्रकृति के प्रति मानव का एकात्म प्रेम तथा दृश्य प्रकृति के महती अवदानों के प्रति मनुष्य के उपोभाव का विवेचन इस पाँचवें अध्याय के विवेच्य विषय है। प्रकृति और मानव के सह अस्तित्व के संदर्भ में विश्व के चिंतकों की अवधारणा का संश्लिष्ट विश्लेषण इस अध्याय के केंद्रीय विषय बना है। यह बोध देश के प्रत्येक नागरिक के लिए अनिवार्य है कि प्रकृति प्रेम के साथ–देश प्रेम का तादात्म्य–बौद्ध ही पूर्ण नागरिक व्यक्ति को बनाता है। इस अध्याय का विरल विषय

बना हुआ है, हरेराम 'चेतन' के काव्य में प्रेम–दशाओं की अभिव्यंजना इसी अध्याय में उनके काव्यों के शिल्प–विधान और उनके काव्य–शैली की आख्या भी संदर्भित हुई है। कवि और चिंतक–समीक्षक हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' की समीक्षा–दृष्टि, उनके संपादन कला, भूमिका लेखन और भाषा–दृष्टि तलस्पर्शी विचार किया गया है। इसी अध्याय में विद्वानों और जिज्ञासुओं द्वारा लिए गए इंटरव्यू भी सम्मिलित है। आधार ग्रंथों और संदर्भ ग्रन्थों की सूची अंत में दे दी गई है।

शोध विषय की परिकल्पना

साहित्य अथवा काव्य सृजन मानव के उच्चतम मानव–मूल्यों का आवश्यक और सार्वकालिक सम्यक् कल्प है, जो मानवीय चेतना के अंतरंग और बहिरंग अनेक स्तरों में चेतना का परिष्कार कर उनकी रक्त वाहिनियों में मनुष्य और मनुष्यता के उन्नति–अवन्नति विकास ह्रास के अंतरण तथा रूपांतरण के विकास की कारिका लिखती हैं जिसमें काव्यगत चेतन में लोकजीवन, राष्ट्रजीवन, व्यक्ति, परिवार और समाज की विविधता और जटिलता में गत्यात्मकता का उपाधान करती है। साथ ही संस्कृतिक और ऐतिहासिक प्रश्नों को समझने की अव्याहत दृष्टि भी प्रदान करती है साथ ही राष्ट्रीय संदर्भों उभार कर व्यक्ति और वृहत्रर समाज को उसके प्रति कर्त्तव्यों की दीक्षा देती है। साहित्य ही कविता ही व्यक्ति और समाज के दायित्वों का नैतिक रंगमंच सजाता है। साहित्य चिंतकों का यह निर्विवाद निष्कर्ष है कि मानव और मानवता का एक स्थूल इतिहास होता है और एक सूक्ष्म इतिहास भी। स्थूल इतिहास की संभाल प्रबुद्ध मनीषी और सांस्कृतिक संस्थाएँ करती है तथा सूक्ष्म इतिहास का संरक्षण साहित्य के द्वारा कविता के द्वारा ही संभव होता है। इसी वैचारिक मंथन का परिणाम है यह शोध विषय की परिकल्पना।

अनुसंधान की प्रविधि

हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' की समग्र कृतियों में मानवता और मानव जीवन और एतेहासिक संभावनाओं बीच अन्तर्निहित है। उन अन्तर्निहित बीजों में मनुष्य जीवन और उसके मूल्यों के बीच उठने पालने वाले द्वंद्व के कारण दुविधा में फँसे पात्रों एवं तादात्म्य का निष्कलुप ताप झेलने वाले चित्त की विलक्षण क्षमता के केंद्र में समकालीनता को दुस्साह अतीत से जोड़कर साहित्य की समग्रता में परखना विवेच्य शोध का उद्देश्य है, जिसके अंतर्गत लोक चेतना और मानवीय संघर्ष के वृत्त में घिरे मनोसंवेदनात्मक चेतन का समग्र स्वर मुखरित है। इस शोध

विषय की प्रविधि के अंतर्गत हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' द्वारा सभी कृतियाँ होगी। उनसे समकालीन पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेख, समीक्षाएँ इसमें सम्मिलित की जायेंगी।

अनुसंधान प्रविधि :–

प्रस्तावित शोध विषय के लिए निम्नंकित शोध विधियों का अनुसरण किया जाएगा।

1. हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' लिखित समस्त कृतियों का विवराणात्मक विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाएगा।
2. संदर्भ ग्रन्थों का अध्ययन विषय की जानकारी के लिए विभिन्न विद्वानों के द्वारा लिखे गए ग्रन्थों से प्रमाण संग्रहित करना।
3. विभिन्न विश्रुत विद्वानों के पत्रों से संदर्भ प्रस्तुत कर विवेच्य विषय को संपुष्ट करना।
4. विभिन्न विद्वानों द्वारा लिए गए इंटरव्यू से प्रमाण देखकर विषय को पुष्ट करना।
5. हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' से व्यक्तिगत संपर्क कर संवाद करना।

उपकरण

क) संबंधित पुस्तकों का संग्रह करना।

ख) संबंधित पत्र–पत्रिकाओं का संग्रह करना इत्यादि इस शोध विषय के प्रविधि के अंतर्गत सम्मिलित होगा।

शोध का उद्देश्य :–

इस शोध का उद्देश्य एक ऐसे सृजनशील व्यक्तित्व और रचना संसार को सामने लाना है जिसमे अपने समय की ज्वलंत समस्याओं का संवेदना का एंव समाज की ह्रासोन्मुख सांस्कृतिक रेखाओं का नवीन आकलन किया है। समाज और देश की कशमसाती सामासिक चेतना में नई उर्जा का संचार किया है।

भाषा और शैली के स्तर पर एक ताजगी पूर्ण नर क्षितिज का अनावरण किया है। उद्देश्य यह भी रहा है कि कृतिकार के बहुआयामी काव्य समझ में उपस्थापित बिम्बों, प्रतिकों और मिथकों की अर्थवता को वर्तमान सन्दर्भों में परख कर ंउनकी सीमाओं की पहचान की जाये।

शोध विषय का चयन :–

सर्जना और रचनाकार साथ अन्योन्याश्रय संबंध होता है। कविता सृजन के क्रम में रचनाकार के व्यक्तित्व का एवं रचनाशीलता का परिष्कार होता है साथ ही मनुष्य जीवन में होते कटाओं की समझ अत्यंत गहरे रूप में होती है। हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' की रचनाशीलता सामाजिक समरसता, प्रेम, संघर्ष और मानवीय उदात्त मूल्यों और जीवन यथार्थ, संस्कृतिक ताप की अनुभूति कराने वाली है साथ ही युग के सामाजिक झंझावातो के उत्ताप को उसकी दाहकता को महसूस करती है। 'चेतन' की संपूर्ण वैयक्तिक अनुभूतियाँ, आज के चक्रिल स्वार्थ की आपाधापी एवं कारात्मक संवेगों का निषेध करते हुए, सकारात्मक मानवीयता एवं उदात्त मानवीय मूल्यों की हिमायत करती है साथ ही व्यक्तिगत प्रेम राग में भी संबंधों की सघनता का चित्र उकेरते हैं।

अपने शोध विषय के चयन की पृष्ठभूमि में हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' के समग्र कृतित्व में जीवन साज पर बजता हुआ मनुष्यता रक्त प्रवाह है जिसकी संवेदना को सुनने के लिए उनकी कृतियों की धमनियों पर एक कुशल वैध की तरह हाथ रखना की आवश्यकता महसूस हुई। शोध विषय का उद्देश्य भी यही रहा।

शोध अध्ययन का क्षेत्र

प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व का गठन उसकी वैचारिक आंतरिकता और संवेदनात्मक संवेगों की सघनता, अनुभूति की गहराई तथा उसकी तीव्रता जैसे उपादानों से होती है। ऐसे व्यक्तित्व प्रतिभा रचनाकार जब भूत, भविष्य एवं वर्तमान के सम्मिलित आयामों को जब अपनी कारयित्ती तथा भावयित्ती प्रतिभा का अविच्छिन्न धरातल बनाकर सृजन करता है तो वह सार्वकालिक कवि रचनाकार माना जाता है ऐसा सृजनधर्मी रचनाकार दृष्टिसंपन्न होता है क्योंकि जो कई रचनाकार सूक्ष्मदर्शी होता है– अन्तरदर्शी, कालदर्शी होता है वही सर्जक भी होता है। ऐसे सर्जक व्यक्तित्व में विश्व दृष्टि एवं व्यापक जीवन दृष्टि शाश्वत आधार पाती है।

हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' मनुष्य–जीवन और मानवता को जीवंत मूर्ति गढ़नेवाले स्वप्नशील रचनाकार है जिनकी संवेदनशील आत्मा से दृश्य–अदृश्य सामाजिक उदात भावों के शब्द आकार लेते हैं। उनकी सचेत सजग दृष्टि अत्यंत सूक्ष्मता से खोज लेती है सामाजिक संघर्षों के मूल स्रोत को और विसंगत सामाजिक दरारों को। हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' विचारों से लेस ऐसे समयदर्शी रचनाकार है जिनका वैयक्तिक जीवन स्फटिक के मानिन्द अंदर और बाहर एक समान पारदर्शी है। वही पारदर्शिता उनके काव्यों में भी रूपाकार पाती है। हरेराम त्रिपाठी

'चेतन' रचना धर्मिता का वहिर्गामी है उसकी मूल शिराएँ बहुत गहरे तल में पोषण पाती है। वस्तुतः 'चेतन' के सृजन के केंद्र में व्यक्ति है, परिवार है, समाज और देश है और उसका धुर्वीय क्षितिज मानवता का है। चुंकि हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' प्रकृति, परिवेश, समय, संस्कृति के उद्त्राता रचनाकार है। जिनकी रचनाओं में जीवन के प्रति अटूट जिजीविषा है, शाश्वत आस्था है अतः उनकी कृतियों की समग्रता, सामाजिक–समरस जीवन के अभंग स्वर को शोध अध्ययन का क्षेत्र बनाया।

शोधकार्य का प्रारूप

प्रस्तावना :

प्रथम अध्याय : जीवन परिचय

क) जीवनवृत्त और काव्य–सर्जना सम्मान एवं पुरस्कार।

ख) प्रारंभिक जीवन और स्वभावजन्य संस्कार।

ग) अध्ययन तथा अध्यापकीय जीवन।

घ) पारिवारिक परिवेश एवं परिचय।

ङ) कलात्मक एवं अन्य रुचियाँ।

च) काव्यगत संस्कार एवं प्रेरणा स्रोत।

द्वितीया अध्याय : हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' का रचना संसार : एक विहंगम दृष्टि

क) प्रेममयी शबरी 1990

ख) पंचामृत 1990

ग) शब्द गन्ध, सह संकलन 1999

घ) अंतर के आँगन से (2002 दूसरा सं– 2018)

ङ) युग्म भूमि

च) प्यासे समय की चीख 2017

छ) उलगुलान की आग, प्रबंध काव्य 2015

ज) निर्णय के तट पर 2021

झ) हिंदी साहित्य के चार शिखर पुरुष 2022

ञ) पत्र–दीप 2023

ट) मंगल पाण्डेय, प्रबंध काव्य 2023

तृतीय अध्याय : हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' की समकालीन काव्य दृष्टि

क) नारी अस्मिता और प्रेम

ख) लोक दृष्टि

ग) सामाजिक दृष्टि और यथार्थ चेतना।

घ) सांस्कृतिक अवधारणा का स्वरूप।

ङ) विकासशील एवं सार्वभौम काव्य दृष्टि।

चतुर्थ अध्याय : हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' की प्रेम संबंधी अवधारणा

क) नारी अस्मिता और प्रेम ।

ख) मानवीय प्रेम की अनुभूति।

ग) राष्ट्रीय प्रेम के ज्वलन्त स्वर।

घ) 'युग्म भूमि' में प्रेम का स्वरूप और उसकी दशाएँ।

ङ) पारिवारिक ग्रामीण और सामाजिक प्रेम–चेतना।

च) 'उलगुलान की आग' काव्य में प्रेम के विविध रूप।

छ) 'मंगल पाण्डेय' काव्य में देश प्रेम का ज्वलंत रूप और अन्य प्रेम छवियाँ।

पंचम अध्याय : हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' के काव्य में प्रकृति प्रेम का महत्व एंव दृष्टि

क) विभिन्न प्रसंग में प्रवृत्ति की सत्ता का निरूपण।

ख) प्रकृति और मानव के सह अस्तित्व का निरूपण।

ग) प्रकृति प्रेम और देश प्रेम की एकात्मकता।

घ) हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' समग्र काव्य में प्रेम दशाओं की अभिव्यंजना

ङ) हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' का शिल्प विधान और शैली।

च) हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' की समीक्षा दृष्टि।

छ) पत्रकारिता एवं संपादन कला।

ज) भूमिका लेखन की भाषा शैली की दृष्टि।

झ) निष्कर्ष और उपसंहार।

साक्षात्कार :

उपसंहार :

परिशिष्ट :

क) आधार ग्रन्थों की सूची।

ख) सहायक ग्रन्थों की सूची।

ग) पत्र–पत्रिकाएँ

घ) वेबसाईट

नोट : आवश्यकता पड़ने पर शोध निर्देशक के आदेश से इसमें संशोधन परिवर्तन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

क) आधार ग्रन्थ

1. अंतर के अंगन से, एजुकेशनल बुक सर्विस 01 जनवरी 2020।
2. निर्णय के तट पर, सर्व भाषा ट्रस्ट 01 जनवरी 2021।
3. फूल गंगबरार के (सर्वभाषा ट्रष्ट) 9 जुलाई 2024।
4. पत्र–दीप 2023 सर्वभाषा ट्रष्ट 9 दिसंबर 2022
5. हिन्दी के चार काव्य–शिखर एक मूल्यांकन (सर्व भाषा ट्रष्ट 01 जनवरी 2021)

ख) सहायक ग्रन्थ

ग) पत्र–पत्रिकाँए:–

1. अबुआ झारखंड	(साप्ताहिक पत्रिका)	रांची
2. झारखंड	(मासिक पत्रिका)	गुमला
3. आदिवासी सकम	(साप्ताहिक पत्रिका)	जमशेदपुर
4. हिन्दुस्तान	(दैनिक समाचार पत्र)	रांची
5. प्रभात खबर	(दैनिक समाचार पत्र)	रांची
6. आदिवासी	(साप्ताहिक पत्रिका)	रांची

शोध निर्देशक
डॉ जितेन्द्र कुमार सिंह
(सहायक प्राध्यापक)
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग राँची
विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

शोधार्थी
रोहित केरकेट्टा
यू.जी.सी.नेट उत्तीर्ण
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

<u>घोषणा पत्र</u>

मैं रोहित केरकेट्टा, शोध निर्देशक डॉ0 जितेन्द्र कुमार सिंह (सहायक प्राध्यापक विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग राँची विश्वविद्यालय, राँची) के निर्देशन में पीएच0डी0 शोध कार्य करना आरंभ कर रहा हूँ। मेरा शोध का विषय **"हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' की काव्य दृष्टिः एक अध्ययन"** है। अतः मेरे द्वारा प्रस्तावित शोध कार्य मौलिक एंव नवीन होगा।

शोधार्थी

रोहित केरकेट्टा
(यू0 जी0सी0 नेट उत्तीर्ण)